शोध मंथन, 2018 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 5.463(SJIF)
UGC Approved Journal No. 40908

ग्रामीण क्षेत्रों में संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका

पूजा यादव*,वन्दना राठौर**
*&**शोधछात्रा, समाजशास्त्र विभाग,
कमलाराजा कन्या शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कम्पू, ग्वालियर
सम्बद्ध–जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म0प्र0)

सारांश

भारत गाँवों का देष है और यही गाँव के लोग यदि जागरूक नहीं होगे तो देष कभी भी विकास की तरफ अग्रसर नही हो सकता है। वर्तमान समय में इस बात को झूठलाया नहीं जा सकता है कि गाँव अब षहरों से पीछे नहीं है जिसका सबसे कारण संचार माध्यम है। संचार माध्यम जहाँ षहरों को विकसित करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है वहीं गाँवों को विकसित करने तथा लोगों में भी जागरूकता लाने का कार्य किया जा रहा है। गाँवों में सुविधाओं को पहुँचाने के लिए संचार प्रौद्योगिकी एक उपयोगी उपकरण सिद्ध हो रहा है जहाँ गाँवों के लोग सुविधाओं से वंचित रहते है वहीं संचार प्रौद्योगिकी ने उन्हें एक नया आयाम एवं दिषा प्रदान किया है। सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में षिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सषक्तिकरण, पुलिस प्रषासन आदि को संचार माध्यम से जोड़कर ग्रामीणों को सुविधा पहुँचा रही है वहीं किसानों के लिए नये–नये कृशि कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण किसानों को फायदा पहुँचा रही है। वर्तमान समय में सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के लिए षिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, बिजली, जल संरक्षण, कृशि विकास, पर्यावरण संरक्षण इत्यादि की जानकारी संचार माध्यम से देकर भारत को सषक्त एवं विकसित देषों में जोड़ने का प्रयास जारी है।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः
पूजा यादव*,
वन्दना राठौर**

ग्रामीण क्षेत्रों में संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका

शोध मंथन, जून 2018,
पेज सं0 1–7
Article No. 1
http://anubooks.com
?page_id=581

पूजा यादव, वन्दना राठौर***

आज विश्व में भारत को जो नई पहचान मिली है, वह संचार प्रौद्योगिकी में हो रही प्रगति से ही है इलेक्ट्रानिक डाटा के रुप में किये गये संदेशो को अधिक सरल, सहज एवं रुचिकर बनाना आवश्यक है यह तभी सम्भव है जब सूचना एवं संचार तकनीकी की डिजिटल भाषाओं को उसी क्षेत्र की भाषा के अनुरुप लोगों तक सूचनाये पहुंचायी जाये जिससे देश के सर्वागिक विकास का लक्ष्य प्राप्त हो सके संचार लागों को सूचनामों से सुसज्जित करने में अहम भूमिका निभाता हैं विकासात्मक संचार ऐसे विकास के लिए कार्य करता है, जो सहभागिता व विकेन्द्रोकरण पर आधारित है।

सरकार के राष्ट्रीय साझा–न्यूनतम कार्यक्रम में बुनियादी प्रशासन की गुणवत्ता में सुधार को उच्च प्राथमिकता दी गयी है और इसके लिए आम आदमी से सम्बन्धित क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर ई प्रशासन को बढावा देने का प्रस्ताव किया गया है। तदानुसार एक राष्ट्रीय ई प्रशासन योजना (N E G P) की रुपरेखा तैयार की गयी है यह योजना केन्द्रीय राज्य और स्थानीय प्रशासन स्तर पर लागू की जायेगी सरकार का लक्ष्य आम आदमी को स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सभी सरकारी सेवायें समन्वित सेवा के रुप में आजीवन सुलभ कराना है तथा साथ ही यह सुनिश्चित करना है कि ये सेवायें सक्षम पारदर्शी और विश्वसनीय हो और आम आदमी को बुनियादी जरुरते पूरी करती हो सुचना प्रोद्योगिकी का फायदा तभी सभी लोगों तक पहुंच सकता है जब डिजिटल सूचना भी भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हो भारतीय भाषाओं में आई.सी.टी का व्यापक इस्तेमाल तभी सम्भव हो सकता हैजब सम्बन्धित उपकरण, उत्पादक और संसाधन आम आदमी को आसानी से उपलब्ध हो।

शब्द के विकास में जितनी भूमिका विकास की है उससे कई अधिक भूमिका विकास सहायक संचार को है विकास सहायक संचार एक बहुउददेशीय प्रक्रिया है। जिसके माध्यम से विकास कार्यों एवं योजनाबद्व कार्यों की जानकारी को बॉटा जा सकता है। विकास सहायक संचार का सम्बद्व राष्ट्रीय कार्यक्रम जैसे कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण, जनसंख्या नियत्रण, साक्षरता अभियान, रोजगार सृजन और गरीबी उन्मूलन आदि क्षेत्र में है। अतः सामाजिक दृष्टिकोण से इसका प्रभाव व्यवहार, चिंतन के ढग, खान पान, पहनावे से लेकर सामाजिक, भाविक, राजनीतिक जागरुकता, व्यवहार दृष्टिकोण जीवन शैली में स्पष्ट परिवर्तन दिखाई दे रहा है। विकास सहायक संचार की गरीबी उन्मूलन में भूमिका महत्वपूर्ण है।

विकास सहायक संचार समाज के जीवन स्तर में सुधार, शिक्षा के प्रसार, समाज, ज्ञान, जिज्ञासा एवं इच्छा इत्यादि को निरन्तर और व्यापकता प्रदान की है जो गरीबी उन्मूलन में सहायक है। गरीबी उन्मूलन हेतु आवश्यक है कि व्यक्ति जागरुक हो तथा विभिन्न क्रिया विधियों में उनकी सहभागिता विस्तृत हो व्यक्ति के जागरुकता के समवृद्वि एवं विकास सहायक संचार के साथ महत्वपूर्ण रुप से जुड़ा है।

गरीबी उन्मूलन में मीडिया की भूमिका अत्याधिक प्रभावी है मीडिया के द्वारा रेडियो, टेली विजन, समाचार पत्र–पत्रिकाएं, इन्टरनेट इत्यादि संचार माध्यमों द्वारा लोगों में शिक्षा, सूचना और चेतनपरक, विकास कार्यक्रमों के माध्यम से मीडिया लोगों के जीवन गुणवत्ता में सुधार करके नागरिकों को एक स्वच्छ समाज का निमार्ण करके उनको अधिकारों के प्रति सजग बना के देश के विकास में सक्रिय भूमिका अदा करने तथा सभी स्तर पर अपने दायित्वों का निर्वहन एवं जागृति

करने में मीडिया की अहम भूमिका प्रभावी है। आज हम सूचना कृत के दौर से गुजर रहे है तथा डिजिटल इण्डिया की परिकल्पना को प्राप्त करने के लिए तीव्र गति से आक्रसित है, वर्तमान सरकार का भी यही लक्ष्य है कि सूचना एवं संचार तकनीकि दृष्टि को अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाया जा सके जिससे भारत स्पष्ट रुप से विश्व के साथ जुड़ सके तथा वैश्विक गांव (ग्लोबल विलेज) की कल्पना साकार हो सके (आज जनसंचार के आधुनिक साधनों ने विश्व की सीमाओं को लाँघ कर अंतरिक्ष में प्रवेश कर लिया है लेकिन प्रकृति का यह कैसा विरोधाभास है कि एक ओर मानव अपने विकास की दिशा में कार्यरत है वहीं दूसरी ओर उसकी विध्वसकारी प्रवृत्तियां उसे स्वार्थ की पूर्ति में लगा देती है संचार के वैज्ञानिक साधनों ने जहां विकास के मार्गों को प्रशस्त किया है वहीं साइबर उपकरणों को प्रोत्साहन दिया है। वर्तमान में मानव प्रोद्योगिकी के नये आयाम खेल निकाले है और स्थिति यह है कि उद्योग हो अथवा कोई भी महत्वपूर्ण योजना चिकित्सा का क्षेत्र या मनोरंजन की दुनिया बिना जन संचार के अभाव में इसके अस्तित्व की कल्पना भी नही की जा सकती है।

सदैव से ही प्रकृति के संकेत हमें सूचना, संदेश अथवा समाचार का भाष देते आये है उन्हे जन संचार का माध्यम माना गया है उदाहरणार्थ गौरैया नामक चिड़िया अंगर पानी में क्रीड़ा करते देखी जाती है तो यह बरसात आने का संकेत माना जाता है शिक्षा एवं विकास से मानव ने प्रकृति में व्याप्त विद्युत तरंगों एवं अन्य स्त्रोतों की अपार शक्ति को खोज कर संचार माध्यमों की जादू नगरी का निर्माण कर दिया है।

मनुष्य के अस्तित्व की निरन्तरता के लिए संचार या सम्प्रेषण एक प्रभावी माध्यम है जो किसी भी समूह अथवा समाज के निर्माण हेतु एक प्राथमिक आवश्यकता है। संचार कुछ निश्चित प्रतीकों एवं चित्रों के माध्यम से दो या दो से अधिक सामाजिक इकाइयों के मध्य विचार, सूचना, ज्ञान, अभिवृत्ति एवं भावनाओं के विनिमय की एक प्रकिया है। इस प्रक्रिया के द्वारा हक दूसरों को समझाते है और बदले में दूसरो के द्वारा समझे जाने का प्रयास भी करते है संचार से व्यक्ति सूचनाओं को दूसरों तक पहुँचाता ही नही है बल्कि अधिक सूचनाओं को गृहण की करता है। संचार समूह निर्माण की आवश्यक दशा है इसके बिना समूह का अस्तित्व ही सम्भव नही। संचार किसी भी सामाजिक व्यवस्था में सांस्कृतिक तत्वों की प्रकृति पर आधारित है। संचार उस समय होता है जब एक स्थान और समय की घटनाएं दूसरे स्थान और समय की घटनाओं से घनिष्ट रुप से सम्बन्धित होती है। अतः संचार किसी वस्तु के सम्बन्ध में समान तथा सहभागी ज्ञान की प्राप्ति के प्रतीक के लिए प्राकृतिक उपयोग पर निर्भर होता है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि संचार मानव जीवन को अर्थपूर्ण व उददेश्य पूर्ण बनाता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की आधुनिकतम प्रगति ने जहां विकास के नए द्वार खोले है वही भारत जैसे विकासशील देश में अनेक रीति–रिवाज, परम्परा, अंधविश्वास और पाखण्ड बड़े पैमाने पर फैले हुए है ऐसे में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के लिए सामाजिक चेतना का विकास हुआ इसी विकास में संचार की विभिन्न तकनीकियों का प्रयोग किया जा रहा है।

भारत में लघु तथा व्यापक दोनों स्तरों पर विज्ञान व प्रौद्योगिकी, संचार और विज्ञान को एक–दूसरे के साथ जोड़ने, समन्वित करने, उत्प्रेरित करने और उन्हे समर्थन देने के उददेश्य से भारत सरकार ने 1982 में एक शीर्ष संस्थाके रुप में शब्दीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद

की स्थापना की जिसने 1984 में अपना कार्य शुरु किया विज्ञान और प्रौद्योगिकी विज्ञान ने 1989 एक स्वात्तशासी संस्था के रुप में विज्ञान प्रसार का कार्य शुरू किया किया, जिसमें बडे पैमाने पर टी0वी0 ऑडियों कैसेट, सीडी रोम, प्रकाशनों जैसे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी लोकप्रियकरण के सॉप्टवेयर विकसित करने और उनके प्रचार–प्रसार की दिशा में कार्य किया आकाश वाणी, दूरदर्शन तथा अन्य टी0वी0 चैनल विभिन्न विज्ञानों के कार्यक्रमों का प्रसारण करते है। इसके साथ ही सामुदायिक रेडियो भी विज्ञान संचार के लोकप्रिय माध्यम के रुप में उभर रहा है। केन्द्र तथा राज्य सरकारों, बिडला समूह तथा जवाहरलाल नेहरु स्मारक नीधि ने देश में विभिन्न स्थानों पर अनेक तारामण्डल स्थापित किए है।

सरकारी, गैर सरकारी, स्वैच्छिक निजी तथा व्यक्तिगत स्तरों पर विज्ञान संचार एवं विज्ञान लोकप्रियकरण को दिशा में विभिन्न प्रकार के अन्य प्रयास भी किए जा रहे है अनेक सरकारी तथा गैरसरकारी संस्थाएं जैसे राष्ट्रीय विज्ञान संगृहालय परिषद, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद, आकाशवाणी, दूरदर्शन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग आदि वैज्ञानिक सूचना के प्रचार प्रसार और लोगो में वैज्ञानिक मनोवृत्ति जागृति करने की दिशा में प्रयास कर रहे है।

संचार तकनीकी के विकास में सरकारी संस्थानों की भूमिका :–

लोकतांत्रिक देश के समग्र विकास के लिए पूर्व जानकारी एवं निर्णय लेने की क्षमता एक बहुत महत्वपूर्ण तत्व होता है। इस ओर प्रेरित विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी जन जागरुकता को बढाने के लिए देश में व्यापक स्तर पर राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और स्थानीय कार्यक्रम चलाये जा रहे है। इस सम्बन्ध में राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार विभाग की विगत् 25 वर्षों में प्रमुख भूमिका रही है वैज्ञानिक जागरुकता और जनसशक्तिकरण के क्षेत्र में विज्ञान एंव प्रौद्योगिकी संचार की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रही है। भारत सरकार एंव राज्य सरकार ने और भी सूचना एवं संचार क्रान्ति को सशक्त बनाने के लिए 108 एम्बुलेंस सेवा 1090 महिला हेल्प लाइन, 100 यू0पी0 पुलिस सेवा आदि कार्यक्रमों का क्रियान्वयन किया है।

संचार प्रौद्योगिकी विकास में गैर सरकारी संस्थानों की भूमिका :–

भारत में अनेक स्वैच्छिक संस्थाए है जो विज्ञान की सूचना एवं संचार कार्यक्रमों में रुचि रखती है इनमें से कुछ उस समय से अस्तित्व में है जब शासन की ओर से आम लोगों के बीच विज्ञान लोकप्रियकरण की दिशा में कोई प्रयास भी प्रारम्भ नही किए गए थे। सूचना एंव संचार तकनीकी के विकास में गैर सरकारी संस्थानों में महती भूमिका निभाई है जिसके कुछ कार्यक्रम निम्नवत है–

1. **ई–चौपाल :–** निजी क्षेत्र की कम्पनी आई0टी0सी0 लिमिटेड की ओर से स्थापित विशाल ई–चौपाल नेटवर्क की चर्चा दुनिया भर में हो रही है। इस नेटवर्क के तहत दस राज्यों के करीब 40 हजार गांवो को इंटरनेट और कम्प्यूटर के माध्यम से खेती से जुड़ी हर किस्म की सूचनाए और सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही है और कम्पनी के कर्मचारी आसपास के गांवो के किसानों को अपने नेटवर्क का सदस्य बनाते है। आई0टी0सी0 ने गांवो में असंगठित खेती, कमजोर, बुनियादी, सुविधाओं और विचौलियों की समस्या के समाधान में तकनीक का सहारा लिया है।
2. **किसान राजा :–** विन्फीनेट नाम की कम्पनी ने आन्ध्रप्रदेश और कर्नाटक से किसान राजा की परियोजना शुरु की है जिसके तहत किसान वायरलेस तकनीकी के जरिए सिचांई के काम में

आने वाली मोटरों को नियंत्रित कर सकते है। किसान राजा के जरिए वे खेत में लगी मोटरों को घर से ही बन्द और मद्देनजर भी यह सुविधा महत्वपूर्ण हो जाती है जिससे मोटर खराब होने से भी बच जाती है।

3. **सूचना ग्राम** :– पांडिचेरी में एम0 एस0 स्वामीनाथ शोध सस्थान की ओर से संचालित सूचना ग्राम परियोजना का उददेश्य ग्रामीण को स्थानीय भाषा में महत्वपूर्ण सूचनाएं देना है। इन सूचनाओं में कृषि उर्वरको की खरीद–फरोख्त, बाजार की सम्भावनाओं, सरकारी योजनाओं को लाभ उठाने सम्बन्धी परामर्श, स्वास्थ्य सम्बन्धी सलाह आदि प्रमुख है परियोजना का उददेश्य इससे जुड़े गांवो के लोगों का जागरुक करना है और वह इस लाभ को बखूबी पूरा कर रही है।

4. **ताराहाट** :– टेक्नोलॉजी एण्ड एकशन फॉर रुरल एडवोसमेट (तारा) नाम के गैर सरकारी संगठन ने उत्तर भारत के राज्यों के ग्रामीणों को इंटरनेट से आधारित सेवाएं मुहैया कराने के लिए कई केन्द्र खोले, जिनका नाम तारा केन्द्र रखा गया है जिसके माध्यम से केन्द्र के सदस्यों को शिक्षा, कृषि सम्बन्धी परामर्श, संचार सेवाएं और लघु उद्योग की स्थापना में सहायता जैसी मदद की जाती है।

5. **दृष्टि** :– दृष्टि नामक गैर सरकारी संगठन अपने विशाल नेटवर्क की मदद से ग्रामीणों को कम्प्यूटर अंग्रेजी तथा बी0पी0ओ0 (काल सेंटर) जैसे प्रशिक्षण देता है सरकारी–गैर सरकारी संस्थाओं और बैकों आदि की मदद से नये कारोबार उद्योग धन्धें खोलने तथा रोजगार हासिल करने में भी मदद करता है।

6. **डिजिटल पंचायत** :– दिल्ली से संचालित गैर सरकारी संगठन डिजिटल इम्पावरमेण्ट फाउण्डेशन में 15 राज्यों में 50 डिजिटल पंचायतों को शुरुकर दिया है इसके तहत प्रशासन और लोगों के बीच सूचनाओं के दो तरफ आदान–प्रदान का सिस्टम तैयार किया जा रहा है।

7. **संचार प्रौद्योगिकों की संरचना एवं कार्यशीलता** :– भारत में विज्ञान संचारकों द्वारा जन सामान्य तक अपनी पहुँच बनाने के लिए संचार अनेक साधनो एवं तरीको का उपयोग किया गया है। विज्ञान संचार ने पिछले दशक में भारत पूरे विश्व में नीति निर्धारकों वैज्ञानिकों प्रौद्योगिकों और संचार माध्यम कर्मियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है अनके राष्ट्रीय क्षेत्रीय समाचार पत्रों ने सप्ताहिक विज्ञान पृष्ठ और पत्रिकाओं ने विज्ञान कॉलम प्रारम्भ कर दिये है अब आकाशवाणी एवं टी0वी0 पर भी अनेक प्रकार के कार्यक्रम उपलब्ध है, जैसे रेडियों संकाय, साइंस टुडे, विज्ञान पत्रिका, विज्ञान समाचार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद और आकाश वाणी के दो सयुक्त रेडियो, धारावाहिको विज्ञान विधि और मानव विकास ने रेडियो एवं टी0वी0 में लोकप्रिय विज्ञान की एक अलग विद्या की नीव डाली है। समय–समय पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुफ्त विश्वविद्यालय, विज्ञान प्रसार तथा विज्ञान प्रौद्योगिकी संचार परिषद के प्रसारित होने वाले टी0वी0 धारावाहिक के अतिरिक्त टर्निंश प्वाइंट ने दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है केवल शास्त्र साहित्य परिषद, कर्नाटक राज्य विज्ञान परिषद उपलब्ध पेपर जैसी स्वैच्छिक संस्थाए, लोक कलामो, नुक्कड नाटको, रंजमंच, कठपुतली लोक गीतो, प्रहसनो आदि के माध्यम से लोगों तक विज्ञान सम्बन्धी जानकारी के प्रसार–प्रचार में सक्रिय रुप से संलग्न है।

सूचना संचार प्रौद्योगिकी ने निम्नवत् क्षेत्र के विकास में अहम भूमिका निभाई है–

1. **स्वास्थ्य के क्षेत्र योगदान** :–एम्बुलेंस सेवा, ई–मेडिसन, एव आधुनिक पैथोलॉजी की मशीने तथा आपरेशन की नवीन आधुनिक विधिया–

2. **शिक्षा के क्षेत्र में योगदान** :– ई–पुस्तके, परीक्षा के नमूने वाले प्रश्न–पत्र, पिछले वर्षो के प्रश्न–पत्र आदि देखने के लाभ विशेष व शोधकर्ताओं, व्यावसायिक साथियों से दुनिया के किसी भी कोने पर आसानी से सम्पर्क कर सकते है।

3. **सड़क के सुधार में योगदान** :– सड़क एक शहर से दूसरे शहर जोड़ने का सफल माध्यम जिससे आयात–निर्यात आवागमन सुलभ हुआ है। राष्ट्रीय राजमार्गों के रख रखाव के लिए टोल–टैक्स आदि में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की अहम भूमिका है।

4. **बिजली संरक्षण में योगदान** :– ऊर्जा के संसाधन सीमित है। ई0एफ0एल0 का प्रयोग कर हम बिजली की लागत को कम कर सकते है। ऊर्जा संरक्षण कर हम उन गांव तक बिजली पहुंचा सकते है। जहां आज तक बिजली पहुंची नही है।

5. **जल संरक्षण में योगदान** :–प्रधानमंत्री ने अपने रेडियों कार्यक्रम मन की बात में बढते सूखे के बीच जल और जलाशय संस्थान की बात कही है इसके लिए मीडिया से भी सहयोग मांगा।

6. **कृषि विकास में योगदान** :– किसान घर बैठे किसान सेन्टर में 1551 या 18001801551 पर निःशुल्क फोन करके अपनी कृषि सम्बन्धी समस्याओ का समाधान कर सकता है।

7. **पर्यावरण संरक्षण में योगदान** :– पर्यावरण सूचना पत्र के द्वारा पर्यावरण सम्बन्धी सभी जानकारियाँ–प्रदूषण के कारण, नवीनीकरण ऊर्जा मुरुस्थलीकरण, जैव विविधता आदि के बारे में जानकारियों को कम्प्यूटर से संग्रहित कर जन सामान्य तक पहुचायी जा सकती है।

8. **प्रजातंत्र को सफल बनाने में योगदान** :–लोकतंत्र का आधार लोक सम्पर्क है। लोक सम्पर्क के सर्वोत्तम माध्यम का अर्थ समाचार पत्र करते है इसके बाद रेडियो, टेलीविजन, चलचित्रों और इन्टरनेट आदि का स्थान है, सूचना एव संचार तकनीकी की क्षमता को अधिक सफल एवं सार्थक बनाने हेतु सुझाव–

- सूचना एवं संचार तकनीकी को बढाने के लिए शिक्षा के स्तर को बढाया जाना अति आवश्यक है।
- संचार एवं तकनीकी का बढावा देने के लिए सरकार को सब्सिडी देना चाहेगी।
- सरकार एवं गैर–सरकारी संगठनो के माध्यम से कृषि में तकनीकी संसाधनों से सम्बन्धित प्रशिक्षण कार्यक्रमों को निरन्तर करवाया जाना आवश्यक है।
- संचार तकनीकी से सम्बन्धित होने वाली हानि सम्बन्धित कमियों को दूर किया जाना चाहिए।
- कौशल विकास के माध्यम से लोगों को तकनीकी की जानकारी दी जा सकती है।

संचार एंव तकनीकी के प्रस्ताव के कारण समाज में व्याप्त दृष्टियों अंधविश्वासों को समाप्त करने के सत्त प्रयास किये जाने चाहिए।

संन्दर्भ

1. वही *विज्ञान संचार*, तक्षशिला प्रकाशन, नईदिल्ली, 2001
2. सिंह कटार, *ग्रामीण विकास सिद्धान्त नीतियॉ एवं प्रबन्ध*, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2011
3. दयाल, मनोज, *विकास संचार अर्थअवधारणा एवं प्रक्रिया पाठ*, प्रकाशक वर्धमान महावीर वि0 विद्यालय, कोटा, 2008
4. विल्काक्स, *लैण्ड एण्ड स्वाइल*, आरएनआईपब्लिकेशन, पिलानी, 2009
5. रन्धावा, *''ग्रीनरिवोलूशन''* विकास पब्लिशिंग हाउस, 2002
6. चौहान आर0वी0सिंह, *हमीरपुरतहसील में भूमि उपयोग*, पोषण स्तर एवं मानव स्वास्थ्य, शिल्पी पब्लिकेशन, इलाहाबाद, 1992
7. *The Media & The Information & Communication Technology & Poverty# An Asian Perspective*. ADB Institute Working Paper (12).2001

8- Srinivasa, G, *Rural Telephony*, Kurukshetra, PD, New Delhi, October, 2001

9- Tenth Five Year Plan, Chapter Communication, Govt of India, New Delhi, 2002-07.

10- Truelove, W. The selection of media for distance education in agriculture, 1998

11. दत्त आर0 एवं सुन्दरम के0पी0एम0, *भारतीय अर्थव्यवस्था*, टी.बी.एच. पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली, 1994
12. यादव, रामजी *ग्रामीण विकास*, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, पृ0–**7**, 2003
13. पटैरिया, मनोजकुमार, *तरंग*, माह अक्टूबर, 1997
14. *योजना*, फरवरी, पृ0–**7–8,** 2006